

# दानिय्येल की पुस्तक - संख्या एक सौ सत्तर

आत्मा का दुर्ग: भविष्यवाणी के संदर्भ में दैवीय सिंहासनारोहण और रूपांतरण की समझ

Jeff Pippenger

2024-03-31

2014 में यूक्रेनी युद्ध का आरम्भ करने वाली शक्ति के रूप में रूस की पहचान करने की कुंजी "गढ़" है, जो राज्य का सिर, अर्थात् उसकी राजधानी, है। मानव-मन्दिर सिर और शरीर से मिलकर बना है। सिर उच्चतर स्वभाव है, और शरीर निम्नतर स्वभाव है। "सात काल," जिनका अंत 1844 में हुआ, तब यरूशलेम के साथ जोड़े जाने थे, जो यहूदा का सिर था। यरूशलेम के मन्दिर में उस राजा का सिंहासन स्थित था, जो यरूशलेम का सिर है, और यरूशलेम यहूदा का सिर था। मानवता के साथ देवत्व का संयोग, जो एक लाख चवालीस हजारों की मुहरबन्दी का प्रतिनिधित्व करता है, "मसीह का मन" प्राप्त करने के रूप में प्रस्तुत किया गया है। मन उच्चतर स्वभाव है, और इसलिए वही "सिर" है।

जब वे, जिनका प्रतिनिधित्व दानिय्येल करता है, उस स्त्रीलिंगी कारणकारी दर्शन को देखते हैं जो उन्हें मसीह के स्वरूप में बदल देता है, तो वे मसीह का मन, जो दूसरे आदम हैं और आत्मिक हैं, प्राप्त कर चुके होते हैं। उस समय उनका वास्तविक देहधर्मी मन, जो उन्हें पहले आदम के पतित हो जाने और अपनी सृष्टि के क्रम को उलट देने के बाद उससे विरासत में मिला था, क्रूस पर चढ़ा दिया जाता है। परमेश्वर की व्यवस्था के विरुद्ध लड़ने वाला वह देहधर्मी मन, जो उन्हें जन्म के समय बिना अपने किसी चुनाव के मिला था, मसीह के मन से बदल दिया जाता है, जिसे वे अपने स्वयं के चुनाव से ग्रहण करते हैं, और जो परमेश्वर की व्यवस्था के प्रति पूर्णतः आज्ञाकारी है। तब उनका नया मन और मसीह का मन एक ही मन हो जाते हैं, और दोनों स्वर्गीय स्थानों में सिंहासन पर साथ-साथ वास करते हैं। मंदिर के भीतर एक स्थान है जहाँ परमेश्वर का सिंहासन स्थित है, और मनुष्यों, जो परमेश्वर के स्वरूप में रचे गए हैं, के लिए उसी मंदिर में एक विशिष्ट स्थान है, जो परमेश्वर की उपस्थिति के लिए बनाया गया है।

वह स्थान उनकी निम्न प्रकृति में नहीं है, जिसका प्रतिनिधित्व उत्तरी राज्य करता है। वह उस स्थान में है जिसका प्रतिनिधित्व दक्षिणी राज्य करता है, जहाँ परमेश्वर ने अपना नाम रखना चुना, जो उनका चरित्र है। वह स्थान यरूशलेम में है, पर यहूदा की राजधानी होने के नाते यरूशलेम मुख है, और राजधानी का मुखिया राजा है। और यरूशलेम को राजधानी के रूप में चुना गया, पर साथ ही इसे वह स्थान भी चुना गया जहाँ परमेश्वर अपना मंदिर स्थापित करेंगे। फिर अपने मंदिर में उन्होंने अपना सिंहासन रखा। दक्षिणी राज्य मनुष्य की उच्च प्रकृति का प्रतिनिधित्व करता है, पर उसमें राजा के लिए एक विशेष सिंहासन-कक्ष भी है। सिस्टर वाइट उस स्थान को आत्मा का "citadel" कहती हैं। परिभाषा के अनुसार, "citadel" एक दुर्ग है।

सम्पूर्ण हृदय परमेश्वर को देना चाहिए; अन्यथा परमेश्वर का सत्य जीवन और चरित्र पर पवित्रीकरण का प्रभाव नहीं डाल पाएगा। परन्तु यह एक दुखद तथ्य है कि बहुत से लोग जो मसीह का नाम लेने का दावा करते हैं, उन्होंने सरलता से अपना हृदय कभी उसे नहीं दिया। उन्होंने मसीही विश्वास की माँगों के प्रति पूर्ण समर्पण से उपजने वाली टूटन और पश्चाताप का अनुभव कभी नहीं किया, और परिणाम यह है कि सत्य की रूपांतरित करने वाली शक्ति उनके जीवन में नहीं है; मसीह के प्रेम का गहरा, मन को कोमल करने वाला प्रभाव जीवन और चरित्र में प्रकट नहीं होता। परन्तु यदि अधीन चरवाहे मसीह के साथ क्रूस पर चढ़ाए गए होते और झुंड के प्रधान चरवाहे के साथ सहकार्य करने के लिए परमेश्वर के लिए जी रहे होते, तो परमेश्वर के झुंड का पालन-पोषण करने का कैसा महान कार्य किया जा सकता था! मसीह मनुष्यों को वैसे ही काम करने के लिए बुलाते हैं जैसे उन्होंने किया। सत्य की शक्ति के विषय में, उसे मानने का दावा करने वालों की व्यावहारिक धर्मपरायणता में दिखाई देने वाली, अधिक गहरी, अधिक सशक्त और अधिक प्रेरक गवाही की आवश्यकता है। उद्धारकर्ता का प्रेम जब आत्मा में वास करता है, तो वह इस बात में स्पष्ट परिवर्तन लाता है कि कार्यकर्ता नाश हो रहे लोगों की आत्माओं के लिए किस प्रकार परिश्रम करते हैं। जब सत्य आत्मा के दुर्ग पर अधिकार कर लेता है, तो मसीह हृदय में

सिंहासनासीन होता है, और तब मनुष्य यह कह सकता है, 'मैं मसीह के साथ क्रूस पर चढ़ाया गया हूँ; तो भी मैं जीवित हूँ; अब मैं नहीं, पर मसीह मुझ में जीवित है; और जो जीवन मैं अब शरीर में जीता हूँ, उसे मैं परमेश्वर के पुत्र पर विश्वास से जीता हूँ, जिसने मुझ से प्रेम किया और अपने आप को मेरे लिए दे दिया।' Review and Herald, 9 अक्टूबर, 1894.

“आत्मा का दुर्ग” वह स्थान है जहाँ “मसीह विराजमान हैं।” मसीह का सिंहासनारोहण तब संपन्न होता है जब देह क्रूस पर चढ़ाई जाती है, और पौलुस की परिभाषा के अनुसार देह निम्नतर प्रकृति है, और वही उत्तरी राज्य है। यही कारण है कि उत्तरी राज्य की भविष्यवाणी केवल 1798 तक ही पहुँची। निम्नतर प्रकृति को दिव्यता के साथ संयुक्त नहीं किया जा सकता; दूसरे आगमन पर पलक झपकते ही उसका परिवर्तन होना आवश्यक है। दक्षिणी राज्य, जिसमें “सिर” था, जो यरूशलेम था, और “सिर” था, जो पवित्रस्थान था, 1844 तक पहुँचा, क्योंकि वह उस उच्चतर प्रकृति का प्रतिनिधित्व करता था जो देह को क्रूस पर चढ़ाने का चुनाव कर सकती थी और विश्वास के द्वारा परमपवित्र स्थान के दुर्ग में प्रवेश कर सकती थी, और मसीह के साथ सिंहासन पर बैठ सकती थी। वह स्थान जहाँ यह संयोग, और वह सिंहासनारोहण घटित होता है, मानवीय मंदिर के दुर्ग में है। अध्याय ग्यारह का पद दस सिर को गढ़ के रूप में परिभाषित करता है, परंतु वह सत्य केवल यशायाह की साक्षी से ही स्थापित होता है, जो यह अपेक्षा करती है कि गढ़ (दुर्ग) के संबंध में सत्य को उसके बाह्य और आंतरिक प्रयोगों में समझा जाए।

परमेश्वर का वचन हमारा आत्मिक भोजन होना चाहिए। 'मैं जीवन की रोटी हूँ,' मसीह ने कहा; 'जो मेरे पास आता है वह कभी भूखा न रहेगा; और जो मुझ पर विश्वास करता है वह कभी प्यासा न होगा।' संसार शुद्ध, निष्कलुष सत्य के अभाव में नष्ट हो रहा है। मसीह ही सत्य हैं। उनके वचन सत्य हैं, और उनका अर्थ सतह पर दिखाई देने से कहीं अधिक गहरा है, और उनकी बिना आडंबर की बाहरी दिखावट से कहीं बढ़कर उनका मूल्य है। पवित्र आत्मा से जागृत मन इन वचनों का मूल्य पहचानेगा। जब हमारी आँखें पवित्र नेत्र-लेप से अभिषिक्त होंगी, तब हम सत्य के अनमोल रत्नों को पहचान सकेंगे, चाहे वे सतह के नीचे ही क्यों न दबे हों।

सत्य सुकुमार, परिष्कृत और उन्नत है। जब यह चरित्र को ढालता है, तो आत्मा उसके दैवी प्रभाव के अधीन विकसित होती है। प्रतिदिन सत्य को हृदय में ग्रहण किया जाना चाहिए। इस प्रकार हम मसीह के वचनों को ग्रहण करते हैं, जिन्हें वह आत्मा और जीवन कहते हैं। सत्य का स्वीकार प्रत्येक ग्रहण करने वाले को परमेश्वर की संतान, स्वर्ग का वारिस बना देगा। हृदय में संजोया गया सत्य ठंडा, मृत अक्षर नहीं, बल्कि एक जीवित शक्ति है।

सत्य पवित्र और दिव्य है। मसीह के सदृश चरित्र के निर्माण में यह किसी भी अन्य बात से अधिक दृढ़ और शक्तिशाली है। उसमें आनंद की परिपूर्णता है। जब सत्य हृदय में संजोया जाता है, तब किसी भी मनुष्य के प्रेम पर मसीह के प्रेम को प्राथमिकता दी जाती है। यही मसीही धर्म है। यह आत्मा में परमेश्वर का प्रेम है। इस प्रकार शुद्ध, निष्कलुष सत्य अस्तित्व के दुर्ग में विराजमान हो जाता है। ये वचन पूरे होते हैं, 'मैं तुम्हें एक नया हृदय भी दूँगा, और तुम्हारे भीतर एक नई आत्मा डालूँगा।' सत्य के जीवनदायी प्रभाव के अधीन जो जीता और कार्य करता है, उसके जीवन में उदात्ता होती है। Review and Herald, 14 फरवरी, 1899.

दानियेल अध्याय ग्यारह में भविष्यवाणीपूर्ण इतिहास का वह दर्शन, पद दो से आरम्भ होता है, और छठा तथा सबसे धनवान राष्ट्रपति, पद ग्यारह से पन्द्रह में वर्णित सिर के साथ मेल खाता है, जो रूस है। उस इतिहास में छठा राष्ट्रपति, सात में से वही आठवाँ बन जाएगा, और वह उस समय राज्य करेगा जब संयुक्त राज्य अमेरिका में कलीसिया और राज्य एक हो जाएँगे, और पद सोलह में, शीघ्र आने वाली रविवार व्यवस्था पर, अपनी अपवित्र व्यभिचारपूर्ण संधि को पूर्ण करेंगे।

जो ध्वज तब ऊँचा उठाया जाना है, वह निराश होगा और साढ़े तीन दिनों की अवधि तक मृत रहेगा, जो दानियेल अध्याय दस में इक्कीस दिन हैं। दानियेल के लिए शोक के इक्कीस दिनों के समापन पर—जो दो गवाहों के लिए सड़क पर मृत्यु के साढ़े तीन दिनों के निष्कर्ष के समान है, जो यहजेकल की घाटी में हैं, जो मृत सूखी हड्डियाँ हैं—वहाँ एक भविष्यवाणी संदेश है जो मृतकों को फिर से जीवित कर देता है। उस प्रक्रिया को दानियेल अध्याय दस में तीन चरणों द्वारा दर्शाया गया है।

पहले महीने के चौबीसवें दिन, जब मैं उस बड़ी नदी के किनारे था, जो हिंदेकेल है; तब मैंने अपनी आँखें उठाई और देखा, और देखो, सन का वस्त्र पहने एक पुरुष था, जिसकी कमर ऊफाज़ के उत्तम सोने की कमरबंद से बँधी हुई थी; उसका शरीर भी बेरील के समान था, और उसका मुख बिजली के स्वरूप जैसा, और उसकी आँखें आग के दीपकों के समान; और उसकी भुजाएँ और उसके पाँव चमकते पीतल के रंग के समान, और उसके वचनों की ध्वनि बहुतों की ध्वनि के समान थी। और मैं, दानिय्येल, अकेला ही उस दर्शन को देखता रहा; क्योंकि जो पुरुष मेरे साथ थे उन्होंने वह दर्शन न देखा, परन्तु उन पर बड़ा भय और काँपना छा गया, सो वे भागकर छिप गए। इसलिये मैं अकेला रह गया और इस बड़े दर्शन को देखा, और मुझमें कोई शक्ति न रही; क्योंकि मेरा रूप-रंग बिगड़ गया था, और मुझमें बल शेष न रहा। तौभी मैंने उसके वचनों की आवाज़ सुनी; और जब मैंने उसके वचनों की आवाज़ सुनी, तब मैं मुख के बल भूमि की ओर होकर गहरी नींद में पड़ गया। और देखो, एक हाथ ने मुझे छू लिया, जिसने मुझे घुटनों के बल और हथेलियों के बल टिका दिया। और उसने मुझसे कहा, हे दानिय्येल, बड़े प्रिय पुरुष, वे बातें समझ जो मैं तुझ से कहता हूँ, और सीधा खड़ा हो जा; क्योंकि अब मैं तेरे पास भेजा गया हूँ। और जब उसने यह वचन मुझसे कहा, तब मैं काँपता हुआ खड़ा हो गया। तब उसने मुझसे कहा, मत डर, हे दानिय्येल; क्योंकि जिस दिन से तू समझने का निश्चय कर के अपने परमेश्वर के सामने अपने आप को दीन कर रहा था, उसी दिन से तेरे वचन सुने गए हैं, और मैं तेरे वचनों के कारण आ गया हूँ। परन्तु पारस के राज्य के प्रधान ने इक्कीस दिन तक मेरा सामना किया; परन्तु देख, प्रधान सरदारों में से एक मीकाएल मेरी सहायता करने आया, और मैं वहाँ पारस के राजाओं के साथ ठहरा रहा। अब मैं आया हूँ ताकि तुझे समझाऊँ कि अन्त के दिनों में तेरी प्रजा पर क्या बीतेगा; क्योंकि यह दर्शन अभी भी कई दिनों के लिए है। दानिय्येल 10:4-14.

दानिय्येल इक्कीस दिनों के शोक के अंत में है, जब वह मसीह का दर्शन प्राप्त करता है और मसीह के वचन सुनता है। परमेश्वर के दृश्य और उच्चारित वचन के इस दर्शन से दो वर्गों का पृथक्करण उत्पन्न होता है, और दानिय्येल सड़क पर मृत था, क्योंकि वह "गहरी नींद में" था।

यीशु ने यह बातें कहकर उनसे कहा, 'हमारा मित्र लाज़र सो रहा है; पर मैं उसे नींद से जगाने के लिए जा रहा हूँ।' तब उसके चेलों ने कहा, 'हे प्रभु, यदि वह सो रहा है तो वह ठीक हो जाएगा।' परन्तु यीशु उसकी मृत्यु के विषय में कह रहा था; पर वे समझे कि वह नींद लेकर विश्राम करने के बारे में कह रहा है। तब यीशु ने उनसे साफ-साफ कहा, 'लाज़र मर गया है।' यूहन्ना 11:11-14.

तब दानिय्येल को पहली बार गब्रिएल ने स्पर्श किया, जो उसे उस राजनीतिक संघर्ष के बारे में बताता है जो दानिय्येल के मृत (सोया हुआ) रहने के दौरान चल रहा था, और यह कि अब वह उस दर्शन की व्याख्या देने जा रहा है जिसने अभी-अभी दानिय्येल को मसीह की छवि में रूपांतरित कर दिया था। फिर उसे दूसरी बार स्वयं मसीह स्पर्श करेंगे।

और जब उसने मुझ से ऐसी बातें कहीं, तो मैंने अपना मुख भूमि की ओर झुका लिया, और मैं निःशब्द हो गया। और देखो, मनुष्यों के पुत्रों के समान एक ने मेरे होंठों को छुआ; तब मैंने अपना मुंह खोला और जो मेरे सामने खड़ा था, उस से कहा, हे मेरे स्वामी, इस दर्शन के कारण मेरी पीड़ाएँ मुझ पर आ पड़ी हैं, और मुझ में कोई शक्ति नहीं रह गई है। क्योंकि इस मेरे स्वामी का दास इस मेरे स्वामी से कैसे बात कर सकता है? क्योंकि मेरे विषय में, तुरंत ही मुझ में कोई शक्ति नहीं रही, और मेरे भीतर श्वास भी नहीं बची। दानिय्येल 10:15-17.

यह सैंतीसवें अध्याय में यहजेकेल की पहली भविष्यवाणी के समानांतर है, क्योंकि घाटी में पड़ी मृत हड्डियों को सुनाने के लिए जो दो भविष्यवाणियाँ यहजेकेल को कही गई थीं, उनमें पहली से देहें तो बनती हैं, पर उनमें तब श्वास नहीं होता, न ही उनमें किसी पराक्रमी सेना का सामर्थ्य होता है। यह यहजेकेल की दूसरी भविष्यवाणी है, जिसमें वे देहें चारों पवनों से श्वास पाती हैं और बलवान सेना की तरह खड़ी हो जाती हैं; और दानियेल के दूसरे स्पर्श पर, "मुझ में कोई शक्ति न रह गई, न मुझ में श्वास ही बची।" तब दानियेल को फिर से कुल मिलाकर तीसरी बार, और गेब्रियल द्वारा दूसरी बार, स्पर्श किया जाता है।

तब फिर एक, जो मनुष्य का सा रूप रखता था, आकर मुझे छू गया और उसने मुझे बल दिया, और कहा, 'हे अति प्रिय मनुष्य, मत डर; तेरा कुशल ही; बलवन्त ही, हाँ, बलवन्त ही।' और जब उसने मुझ से कहा, तब मैं बल

पाया, और मैंने कहा, 'मेरे प्रभु बोलें, क्योंकि तू ने मुझे बल दिया है।' दानिय्येल 10:18, 19.

दानिय्येल का तीसरा स्पर्श यहजेकेल की दूसरी भविष्यवाणी है, जो शरीरों को उनके पैरों पर खड़ा कर देती है, एक शक्तिशाली सेना के समान। उसकी भविष्यवाणी उन लोगों को संबोधित है जो यह पहचानते हैं कि वे मृत हैं, क्योंकि वे शोक में थे, जैसा कि दानिय्येल भी था।

तब उसने मुझ से कहा, वायु से भविष्यवाणी कर; भविष्यवाणी कर, हे मनुष्य-पुत्र, और वायु से कह, प्रभु परमेश्वर यों कहता है: चारों पवनों से आ, हे श्वास, और इन घात किए हुए पर फूँक, कि वे जीवित हों। तब मैंने जैसा उसने मुझे आज्ञा दी, वैसी ही भविष्यवाणी की, और श्वास उन में आ गया, और वे जीवित हुए, और अपने पाँवों पर खड़े हो गए—एक अत्यन्त बड़ी सेना। फिर उसने मुझ से कहा, हे मनुष्य-पुत्र, ये हड्डियाँ सारे इस्राएल का घराना हैं: देख, वे कहते हैं, हमारी हड्डियाँ सूख गई हैं, और हमारी आशा खो गई है: हम सर्वथा कट गए हैं। यहजेकेल 37:9-11.

प्रभु यहजेकेल को भविष्यवाणी करने की आज्ञा देते हैं, और वह उन्हें बताता है कि इस्राएल के घराने की गवाही यह है कि वे मर चुके हैं, आशा के बिना हैं और कट गए हैं। वे शोक कर रहे हैं, जैसा कि दानिय्येल भी शोक कर रहा था, क्योंकि 18 जुलाई, 2020 की असफल भविष्यवाणी से वे निराश हैं, और उसी अवस्था में, यहजेकेल को भविष्यवाणी करने को कहा जाता है।

इसलिए तू भविष्यवाणी कर और उनसे कह, प्रभु यहोवा यों कहता है: देखो, हे मेरे लोगो, मैं तुम्हारी कब्रें खोलूँगा, और तुम्हें तुम्हारी कब्रों से बाहर निकालूँगा, और तुम्हें इस्राएल के देश में ले आऊँगा। और जब मैं तुम्हारी कब्रें खोलूँगा, हे मेरे लोगो, और तुम्हें तुम्हारी कब्रों से बाहर निकालूँगा, तब तुम जानोगे कि मैं यहोवा हूँ। और मैं अपनी आत्मा तुम में डालूँगा, और तुम जीवित हो जाओगे, और मैं तुम्हें तुम्हारे अपने देश में बसाऊँगा; तब तुम जानोगे कि मैंने, यहोवा ने, यह कहा है और इसे पूरा किया है, यहोवा की यह वाणी है। यहजेकेल 37:12-14।

प्रभु, जो प्रधान स्वर्गदूत मिकाएल हैं, उनकी कब्रें खोलते हैं, और प्रकाशितवाक्य अध्याय ग्यारह के दो साक्षी तब पुनर्जीवित किए जाते हैं, उन्हें पवित्र आत्मा दी जाती है और वे खड़े हो जाते हैं, ठीक वैसे ही जैसे यहजेकेल की दूसरी भविष्यवाणी में, जब उन्हें उनकी कब्रों से बाहर लाया जाता है, तब जो खड़े होते हैं उन्हें पवित्र आत्मा दी जाती है।

और साढ़े तीन दिन के बाद परमेश्वर की ओर से जीवन की आत्मा उनमें प्रवेश कर गई, और वे अपने पाँवों पर खड़े हो गए; और जिन लोगों ने उन्हें देखा था, उन पर बड़ा भय छा गया। प्रकाशितवाक्य 11:11.

उन दो गवाहों को मूसा और एलिय्याह के रूप में दर्शाया गया है, और मूसा को प्रधान स्वर्गदूत की आवाज़ से भी पुनर्जीवित किया गया था।

फिर भी महादूत मीकाएल ने, जब उसने शैतान के साथ मूसा के शरीर के विषय में विवाद किया, तो उसके विरुद्ध निन्दात्मक दोषारोपण करने का साहस नहीं किया, पर कहा, प्रभु तुझे धिक्कारे। यहूदा 1:9.

मीकाएल, राजकुमार और महादूत, वही है जिसने दानिय्येल के दसवें अध्याय में आकर गब्रिएल की सहायता की, और पुरुषों और स्त्रियों को जीवन के लिए बुलाने वाली आवाज़ उसी की है।

क्योंकि स्वयं प्रभु आदेश की पुकार, प्रधान स्वर्गदूत की वाणी और परमेश्वर की तुरही के साथ स्वर्ग से उतरेगा; और जो मसीह में मरे हैं, वे पहले जी उठेंगे। 1 थिस्सलुनीकियों 4:16.

दानिय्येल के तीन स्पर्श तृतीय स्वर्गदूत के लौदीकिया आंदोलन से तृतीय स्वर्गदूत के फिलाडेल्फिया आंदोलन में संक्रमण का प्रतिनिधित्व करते हैं, और दानिय्येल दस में वह दर्शन, जो लौदीकिया की छवि से फिलाडेल्फिया की छवि तक इस संक्रमण को संपन्न करता है, उस भविष्यवाणीपूर्ण इतिहास के द्वारा निरूपित है जो अध्याय ग्यारह में प्रस्तुत किया गया है। उस दर्शन को यहजेकेल तृतीय हाय के इस्लाम के दर्शन के रूप में निरूपित करता है। 2014 में, रूस ने दूसरा प्रॉक्सी युद्ध आरंभ किया। 2015 में, सबसे धनी राष्ट्रपति ने छठा राष्ट्रपति बनने के अपने प्रयास आरंभ किए।

2020 में, उस राष्ट्रपति, जो रिपब्लिकन सींग का प्रतिनिधि था, का 'वोक' नास्तिक पशु, जो अथाह कुंड से है, द्वारा वध कर दिया गया, और उसी वर्ष लाओदिकिया के प्रोटेस्टेंट सींग का भी वध हुआ। 2023 में, दोनों सींग फिर से जीवित हो उठे; दोनों ने उस आठवें में, जो सात में से है, अपने रूपांतरण की शुरुआत की। एक, संयुक्त राज्य में कलीसिया और राज्य के एकीकरण के साथ, पशु की राजनीतिक प्रतिमा में रूपांतरित हो रहा है, और दूसरा सींग लाओदिकिया की प्रतिमा से मसीह की प्रतिमा में रूपांतरित हो रहा है। शीघ्र आने वाले रविवार के क़ानून के समय दोनों को ऊँचा किया जाएगा। एक 'सिकंदर महान' बनेगा—दस राजाओं का प्रमुख राजा, जो अपना सातवाँ राज्य रोम की वेश्या को देते हैं—और दूसरा एक पताका के रूप में ऊँचा उठाया जाएगा।

इन दोनों परिवर्तनों को उत्पन्न करने वाला दर्शन वह इतिहास है जो 11 सितंबर, 2001 और रविवार के क़ानून के बीच उद्घाटित होता है। दानियेल अध्याय ग्यारह का पद ग्यारह विशेष रूप से इस संदर्भ में चिन्हित किया गया है कि यदि तुम विश्वास नहीं करोगे, तो स्थापित नहीं किए जाओगे।

हम इस अध्ययन को अगले लेख में जारी रखेंगे।

बाइबल के नियम दैनिक जीवन के मार्गदर्शक होने चाहिए। मसीह का क्रूस वह विषय होना चाहिए, जो उन पाठों को उजागर करे जिन्हें हमें सीखना और आचरण में लाना है। सभी अध्ययन में मसीह को शामिल किया जाना चाहिए, ताकि विद्यार्थी परमेश्वर का ज्ञान ग्रहण कर सकें और अपने चरित्र में उन्हें प्रतिबिंबित कर सकें। उनकी श्रेष्ठता हमारा अध्ययन-विषय इस समय में भी और अनंतकाल में भी होना चाहिए। पुराने और नए नियम में मसीह द्वारा कही गई परमेश्वर की वाणी स्वर्ग से उतरी रोटी है; परंतु जो कुछ "विज्ञान" कहलाता है, उसका बहुत-सा भाग मानवीय आविष्कार के व्यंजनों के समान, मिलावटी भोजन है; वह सच्चा मन्ना नहीं है।

परमेश्वर के वचन में ऐसी बुद्धि मिलती है जो निर्विवाद और अक्षय है—ऐसी बुद्धि जिसका उद्गम सीमित मन में नहीं, बल्कि अनंत मन में है। परंतु जो कुछ परमेश्वर ने अपने वचन में प्रकट किया है, उसका बहुत सा भाग मनुष्यों के लिए अस्पष्ट है, क्योंकि सत्य के रत्न मानवीय बुद्धि और परंपरा के मलबे के नीचे दबे हुए हैं। बहुतों के लिए वचन के खजाने छिपे ही रहते हैं, क्योंकि उन्होंने सच्ची लगन और धैर्य के साथ तब तक खोज ही नहीं की, जब तक कि स्वर्णिम सिद्धांत समझ में न आ गए। वचन की खोज इस उद्देश्य से करनी चाहिए कि उसे ग्रहण करने वाले शुद्ध होकर तैयार किए जाएँ, ताकि वे राजपरिवार के सदस्य, स्वर्गीय राजा की संतान बन सकें।

परमेश्वर के वचन का अध्ययन उन पुस्तकों के अध्ययन का स्थान लेना चाहिए जिन्होंने मनो को रहस्यवाद में और सत्य से दूर ले जाया है। उसके जीवंत सिद्धांत, जब हमारे जीवन में पिरोए जाते हैं, तो परीक्षाओं और प्रलोभनों में हमारे लिए सुरक्षा-कवच बनेंगे; उसकी दैवी शिक्षा ही सफलता का एकमात्र मार्ग है। जब प्रत्येक आत्मा पर परीक्षा आएगी, तो धर्मत्याग होंगे। कुछ लोग विश्वासघाती सिद्ध होंगे—उतावले, घमंडी और आत्मनिर्भर—और सत्य से मुंह मोड़कर अपने विश्वास का जहाज़ डुबो देंगे। क्यों? क्योंकि वे 'परमेश्वर के मुख से निकलने वाले हर एक वचन के अनुसार' नहीं जीए। उन्होंने गहराई तक खोदकर अपनी नींव पक्की नहीं की।

"जब प्रभु के वचन अपने चुने हुए दूतों के माध्यम से उनके पास लाए जाते हैं, तो वे बड़बड़ाते हैं और सोचते हैं कि मार्ग बहुत संकीर्ण कर दिया गया है। यूहन्ना के छठे अध्याय में हम कुछ उन लोगों के विषय में पढ़ते हैं जिन्हें मसीह के शिष्य समझा जाता था, परन्तु जब उनके सामने स्पष्ट सत्य प्रस्तुत किया गया, तो वे अप्रसन्न हुए और उसके साथ फिर न चले। इसी प्रकार ये सतही विद्यार्थी भी मसीह से विमुख हो जाएँगे।" टेस्टिमोनीज़, खंड 6, 132.